Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 1288–1292

INDIA'S STRATEGIC PRESENCE AMID GROWING CHINESE INFLUENCE IN SRI LANKA: IN THE CONTEXT OF THE MODI REGIME

श्रीलंका में चीन के बढ़ते प्रभाव के बीच भारत की सामरिक उपस्थिति: मोदी शासन के संदर्भ में।

Sachin Tiwari [1], Vikash Kumar Meena [1], Shashank Tomar [1]

[1] Research Scholar, Department of Political Science, Banaras Hindu University

Corresponding Author

Sachin Tiwari,
Sachintiwari1369@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.2378

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Sri Lanka, located in the Indian Ocean to the south of India, is an island nation which has a rich and glorious past. It has centuries-old cultural, religious and social relations with India. India and Sri Lanka are closely connected to each other's life traditions and values. At the core of which is the centuries-old belief in Buddhism and Hinduism and shared cultural heritage. Both countries, having shared the experience of colonialism, give an important place to non-alignment and independent decision in their foreign policy. Promotion of their respective national interests, India's concern over questions related to the rights of expatriate citizens, especially Tamils living in Sri Lanka, China's growing role in South Asia, rights over marine resources etc. have been influencing the relationship between the two countries. Due to its geographical location, Sri Lanka holds an important place in India's security purposes. In the 21st century, Sri Lanka has special importance for both India and China. India's current foreign policy towards Sri Lanka, which holds an important place in Indian foreign policy, is keeping in mind the growing influence of China in Sri Lanka. In this article we will mainly study the current state of India Sri Lanka relations during the rule of Narendra Modi in India and the role of China as an influential power.

Hindi: भारत के दक्षिण में हिंद महासागर में स्थित श्रीलंका एक द्वीपीय राष्ट्र है। जिसका अपना एक समृद्ध एवं गौरवशाली अतीत रहा है। भारत के साथ इसके सदियों पुराने सांस्कृतिक धार्मिक सामाजिक संबंध रहे हैं। भारत एवं श्रीलंका एक दूसरे के जीवन परंपरा एवं मूल्यों से निकटता पूर्वक जुड़े हुए हैं। जिसके मूल में शताब्दियों से चली आ रही बौद्ध एवं हिंदू धर्म की मान्यता और साझी सांस्कृतिक विरासत है। उपनिवेशवाद के साझे अनुभव से युक्त दोनों देश अपनी विदेश नीति में गुटनिरपेक्ष और स्वतंत्र निर्णय को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। अपने अपने राष्ट्रीय हितों के संवर्धन, प्रवासी नागरिकों विशेष कर श्रीलंका में रह रहे तमिलों के अधिकारों से जुड़े प्रश्नों पर भारत की चिंता, दक्षिण एशिया में चीन की बढ़ती भूमिका, सामुद्रिक संसाधनों पर अधिकार आदि विषय दोनों देशों के संबध को प्रभावित करते आए हैं। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण श्रीलंका भारत के सुरक्षा प्रयोजनों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 21 वी सदी में श्रीलंका का भारत और चीन दोनों के लिए विशेष महत्व है। भारतीय विदेश नीति में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले श्रीलंका के प्रति भारत की वर्तमान विदेश नीति श्रीलंका में चीन के बढ़ रहे प्रभाव को ध्यान में रख कर है।
इस लेख में हम मुख्य रूप से भारत में नरेंद्र मोदी के शासन के दौरान भारत श्रीलंका संबंधों का वर्तमान स्वरूप तथा एक प्रभावकारी शक्ति के रूप में चीन की भूमिका का अध्ययन करेंगे।

Keywords: South Asia, Tamil Security, Maritime Border, Hinduism and Buddhism, दक्षिण एशिया, तमिल सुरक्षा, सामुद्रिक सीमा, हिंदू व बौद्ध धर्म

1. प्रस्तावना

भारत के दक्षिण भौगोलिक सीमाओं के अति समीप स्थित श्रीलंका द्वीप का इतिहास प्रारंभ से ही भारत के साथ जुड़ा हुआ है। श्रीलंका की अधिकांश जातियां मूल रूप से भारतीय रही है। श्रीलंका के रीति रिवाज, परंपराओं एवं परिधानों आदि पर भारतीय छाप स्पष्ट दिखाई देती है। वास्तव में भारत और श्रीलंका एक ही संस्कृति के विस्तार माने जा सकते हैं। 2000 वर्षों से अधिक के सांस्कृतिक आदान-प्रदान दोनों देशों की जीवन परंपरा में स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। पौराणिक रूप से भारत श्रीलंका संबंध अनादि काल से रहे हैं। महाकाव्य रामायण में लंका का वर्णन सोने की नगरी तथा रावण के राज्य के रूप में है। श्रीलंका की उत्तरी सीमा पर स्थित आदम सेतुय जिसे भारत में राम सेतु कहा जाता है, के साक्ष्य पौराणिक ग्रंथ रामायण में मिलते हैं। सम्राट अशोक ने अपने पुत्र महेंद्र व पुत्री संघमित्रा को लंका में बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार हेतु भेजा था। अशोक के पुत्र ने ही श्रीलंका के राजा को बौद्ध धर्म का उपदेश दिया था। भारत और श्रीलंका दोनों ब्रिटेन के उपनिवेश रहे हैं। एक समृद्ध एवं साझी सांस्कृतिक धार्मिक विरासत के साथ-साथ दोनों देशों ने उपनिवेशवाद के दंश को भी ऐतिहासिक रूप में एक समान रूप से देखा है। दोनों देशों ने स्वतंत्रता के उपरांत एक स्वतंत्र एवं सार्वभौमिक विदेश नीति का अनुपालन करना प्रारंभ किया। हिंद महासागर में अपनी भौगोलिक अवस्थिति के कारण श्रीलंका प्रारंभ से ही भारतीय विदेश नीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हिंद महासागर में अवस्थित श्रीलंका भारत से पाक जलडमरूमध्य द्वारा अलग होता है। श्रीलंका की यह भौगोलिक स्थिति उसे भारतीय सामुद्रिक सुरक्षा तथा हिंद महासागर से जुड़े हुए उसके हितों की निगरानी के लिए महत्वपूर्ण बनाती है। वर्ष 1948 में श्रीलंका को स्वतंत्रता प्राप्त हुई तो भारत सरकार ने स्पष्ट रूप से कहा कि वह श्रीलंका की स्वतंत्रता व संप्रभुता का सम्मान करेंगे। श्रीलंका के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर जान कोटलेवाला भारत के प्रति संदेह के नजरिए से देखते थे। उन्होंने श्रीलंका की संसद में त्रिकोण माली का नव सैनिक अड्डा तथा एक हवाई अड्डे को ब्रिटिश नियंत्रण में रहने देने की अपने निर्णय के समर्थन में कहा कि श्रीलंका के प्रति भारतीय साम्राज्यवादियों की महत्वाकांक्षा को ध्यान में रखते हुए ऐसा करना सर्वदा ठीक है। श्रीलंका सरकार के द्वारा सिंहली भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित करने पर हुए तमिल उपद्रव को के लिए भी उन्होंने भारत सरकार पर ही दोषारोपण किया। भारत और श्रीलंका के मध्य प्रारंभ से ही कुछ मुद्दों पर विवाद बना रहा जिसमें कच्चाथीव द्वीप पर अधिकार तथा तमिलों की नागरिकता आदि प्रमुख मुद्दे थे। वर्ष 1956 में श्री भंडारनायके ने कोटलेवाला की नीति के परे जाकर भारत को अपना सबसे बड़ा मित्र बताया। उन्होंने भारत की इच्छा अनुसार त्रिकोण माली से अपने कब्जे को समाप्त करने का अनुरोध ब्रिटेन सरकार से किया । वर्ष 1962 में भारत चीन युद्ध के दौरान श्रीमती सीरीमाओ भंडारनायके ने युद्ध समाप्ति हेतु तटस्थ देश का सम्मेलन बुलवाया जिसे कोलंबो प्रस्ताव कहा जाता है। वर्ष 1962 में श्रीमती भंडारनायके ने कोलंबो प्रस्ताव न मानने पर चीन की आलोचना की। वर्ष 1965 में लालबहादुर शास्त्री और श्रीमति भंडारनायके के मध्य एक समझौता हुआ जिसके तहत 9,75000 तमिल में से 5,25000 तमिलों को भारतीय नागरिकता तथा 3,00,000 तमिलों को श्रीलंका ने नागरिकता प्रदान की लेकिन उस समय भी डेढ़ लाख तमिल नागरिकों की नागरिकता का फैसला नहीं हो पायाय जो पुनः एक बार दोनों देशों के मध्य विवाद का कारण बना। वर्ष 1974 में श्रीमती इंदिरा गांधी तथा श्रीमती भंडारनायके ने डेढ़ लाख तमिल नागरिकों की नागरिकता के मुद्दे के समाधान हेतु यह निर्णय लिया कि दोनों देश 75,000 नागरिकों को अपने-अपने देश की नागरिकता देंगे। श्रीलंका की जातीय संघर्ष ने भारत श्रीलंका के संबंध को बहुत प्रभावित किया। तमिल ईलम जैसे उग्रवादी संगठन 18000 वर्ग किलोमीटर भूमि पर तमिल गणराज की मांग कर रहे थे ओर इसे लेकर श्रीलंका सरकार भारत पर आरोप लगाती रही कि भारत ऐसे संगठनों की आंतरिक रूप से मदद कर रहा है। वर्ष 1987 में तमिल मुद्दे के समाधान हेतु राजीव और जयवर्धने के मध्य समझौता हुआ जिसमें 18 धाराएं शामिल थी। श्रीलंका में सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए भारतीय शांति रक्षक सेना की भी व्यवस्था इसी समझौते में की गई। श्रीलंका के तत्कालीन राष्ट्रपति प्रेमदास ने शांति सेना की वापसी की मांग की और उन्होंने दक्षेस के पांचवें शिखर सम्मेलन को भी श्रीलंका में आयोजित नहीं होने दिया। इससे भारत की छवि को एक बहुत बड़ा धक्का लगा। तमिल इलम की मांग कर रहे लिट्टे के द्वारा श्रीलंका की रक्षा मंत्री अतुलित मुदली और राष्ट्रपति प्रेमदशा की हत्या कर दी गई, बाद में लिट्टे ने भारत के प्रधानमंत्री रहे राजीव गांधी को भी मानव बम से उड़ा दिया गया। 1990 के दशक के बाद भी भारत श्रीलंका संबंध पर तमिल समस्या की छाया बनी रही, तथापि भारत ने ऐसी स्पष्ट नीति अपनाई कि वह श्रीलंका की राष्ट्रीय एकता, अखंडता एवं संप्रभुता का समर्थक है। वास्तव में 90 के दशक में दोनों देशों के संबंध पर तमिल समस्या हावी रही, लेकिन आपसी सद्भाव बढ़ाने हेतु दोनों देशों के राजनेताओं ने नीतिगत निर्णय तथा समय-समय पर राजनीतिक यात्राएं की। वर्ष 1995 व 1996 में श्रीलंका के राष्ट्रपति चंद्रिका कुमार तुंगा ने भारत की यात्रा की तथा वर्ष 1997 में भारत के प्रधानमंत्री इंद्रकुमार गुजराल ने श्रीलंका की अपनी यात्रा के दौरान आपसी संबंधों के विकास पर बोल दिया।

21 वीं सदी में भारत-श्रीलंका संबंधः

बीसवीं सदी के अंतिम दशक में दुनिया में बहुआयामी परिवर्तन हुए, यू.एस.एस.आर के विघटन तथा दुनिया की अर्थव्यवस्था में उदारवाद ने मुफ्त व्यापार के द्वार खोल दिए। इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ से दुनिया अमेरिकी प्रभुत्व से परे बहुध्रुवीय होने की दिशा में आगे बढ़ने लगी। भारत और श्रीलंका ने वर्ष 1998 में मुफ्त व्यापार संधि पर हस्ताक्षर किए,जो इस सदी के प्रारंभिक वर्ष में लागू हुई। अगले चार वर्ष यानी वर्ष 2004 तक भारत श्रीलंका के मध्य व्यापार में 128 प्रतिशत की वृद्धि हुई, वहीं वर्ष 2006 में सकल व्यापार बढ़ कर पहले से 4 गुना अधिक होकर 2.6 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। वर्ष 2005 में दोनों देश आतंकवाद के सफाए एवं व्यापर वृद्धि पर सहमत हुए। वर्ष 2007 के सार्क के 14वें शिखर सम्मेलन के लिए महिंद्रा राजपक्षे भारत आए। इस मौके पर नई दिल्ली से कोलंबो तक के लिए कार रैली रवाना की गई। दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय और उससे जुड़े मल्टी कैंपस के निर्माण पर पाकिस्तान के विरोध के बावजूद श्रीलंका भारत के साथ खड़ा रहा। वर्ष 2008 के अपने 60वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए

श्रीलंका ने भारत के प्रधानमंत्री को आमंत्रित किया। वर्ष 2009 के तमिल युद्ध में विजय के उपरांत महिंद्रा राजपक्षे ने घोषणा की कि अब संबंधों का नया युग दोनों देशों के मध्य शुरू होगाय भारत हमारा पड़ोसी और सबसे अच्छा दोस्त है। राजपक्षे ने भारत सरकार को युद्ध विषयक जानकारी देने हेतु वर्ष 2010 में भारत की महत्वपूर्ण यात्रा की। भारत सरकार ने युद्ध की समाप्ति के उपरांत 500 करोड़ रुपए देने की घोषणा की। भारत ने अनुदान और सहायता के रूप में 1 अरब डॉलर युद्ध के तीन दशकों के दौरान तबाह बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए प्रदान किए। उत्तरी प्रांत में युद्ध से विस्थापित तमिलों के लिए 50 हजार घरों के निर्माण का वचन दिया। वहीं अगस्त 2010 में भारतीय विदेश सचिव निरुपमा राव ने भारतीय सहायता और पुनर्वासित तमिलों की स्थिति के आकलन के लिए वावुनिया, किलिनोच्ची और जाफना का दौरा किया। उत्तरी श्रीलंका में कृषि को जीवित करने के लिए भारत ने बीज, आईडीपी के तहत 500 ट्रैक्टर और अन्य कृषि उपकरण भेजे। भारत ने सहायता स्वरूप 7800 टन आश्रय और छत सामग्री, 95 हजार कृषि स्टार्टर पैक, 4 लाख सीमेंट बैग की आपूर्ति भी की। राजपक्षे सरकार ने विधवाओं के पुनर्वास में भारतीय नागरिक समाज संगठन द्वारा की गई मदद और पूर्वोत्तर क्षेत्र में किसानों की मदद के लिए भारत की सराहना भी की। भारत-श्रीलंका संबंध उस समय असहज हो गए, जब घरेलू राजनीति से प्रभावित भारत सरकार ने यूएनएचआरसी में मानवता के खिलाफ युद्ध के अमेरिकी प्रस्ताव पर श्रीलंका के खिलाफ मतदान किया। एशिया के किसी भी अन्य देश ने उस प्रस्ताव के पक्ष में मतदान नहीं किया। चीन ने प्रस्ताव के विरोध में खुला समर्थन दिया। भारत के इस कदम ने दोनों देशों के संबंधों को प्रभावित किया।

मोदी युग और भारत-श्रीलंका संबंधः

भारत-श्रीलंका संबंध में एक नए दौर की शुरुआत वर्ष 2015 में हुई, जब श्रीलंका में 10 साल सत्ता में रहने के बाद राजपक्षे मैत्रीपाल सिरिसेना से चुनाव हार गए। सिरिसेना के पूरे चुनावी अभियान के दौरान चीन का बढ़ता प्रभाव और राजपक्षे की चीन परस्त नीतियां मुख्य मुद्दे रहे। सिरिसेना ने अपनी पहली राजकीय यात्रा के लिए भारत को चुना। उसी समय वर्ष 2014 का आमचुनाव चुनाव जीतकर भारत में सत्ता में आए नरेंद्र मोदी ने अपनी विदेश नीति में पड़ोसी देशों को अहमियत देना शुरू किया। अपने शपथ ग्रहण समारोह में उन्होंने सार्क के राष्ट्र प्रमुखों को आमंत्रित किया। मोदी सरकार ने पड़ोसी देशों के साथ संबंध निर्वाहन को एक नई ऊर्जा प्रदान की। विदेश नीति में संस्कृति एवं सभ्यता को भारत की कूटनीति का आधार बनाते हुएय मोदी सरकार ने दुनिया के लगभग सभी देशों के साथ अपने सांस्कृतिक जुड़ाव को अहमियत देना प्रारंभ किया। नेबोरहूड फर्स्ट की नीति पर चलते हुए नरेंद्र मोदी ने 28 वर्षों के पश्चात किसी भारतीय प्रधानमंत्री के रूप में श्रीलंका की यात्रा की। मोदी ने श्रीलंका की संसद को संबोधित करते हुए, बुद्ध के ज्ञान के सहारे युद्ध से मुक्ति की बात कही। मोदी ने इतिहास के माध्यम से श्रीलंका को भारत से जोड़ने की बात कही। मोदी ने अपनी यात्रा के दौरान ब्रिटेन के प्रधानमंत्री डेविड कैमरून के पश्चात किसी देश के प्रमुख के रूप में जाफना की यात्रा भी की। मोदी सरकार ने हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी विदेश नीति को प्राथमिकता प्रदान करना प्रारंभ किया, क्योंकि यह पूरा क्षेत्र भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। किसी तीसरे देश का प्रभाव बढ़ना निश्चित तौर पर भारतीय नीति नियंताओं के सम्मुख एक चुनौती है। मई 2017 में भारतीय प्रधानमंत्री वेसाक दिवस समारोह में भाग लेने के लिए श्रीलंका गए, श्रीलंका ने भारत द्वारा शुरू किए गए दक्षिण एशियाई उपग्रह का स्वागत किया। भारतीय प्रधानमंत्री ने वाराणसी से कोलंबो तक सीधी उड़ान को रवाना किया। वर्ष 2019 में भी मोदी ने अपनी श्री लंका यात्रा के दौरान श्रीलंका की किसी भी तरह की मदद और साथ का भरोसा दिया। भारत ने श्री लंका में पुनर्निर्माण के क्षेत्र में अपने निवेश को बढ़ाना शुरू किया। वर्ष 2019 में हुए आतंकवादी हमले और कोविड के बाद श्रीलंका में एक अभूतपूर्व वित्तीय संकट उत्पन्न हो गया। श्रीलंका में हाहाकार की स्थिति उत्पन्न हो गई। जरूरी सेवाओं, वस्तुओं की कमी होने से मानवीय संकट खड़ा हो गया। कोविड महामारी ने इस द्वीपीय देश के आय के सबसे प्रमुख श्रोतों में से एक टूरिज्म पर सबसे बड़ा हमला किया। टूरिज्म श्रीलंका में आय का तीसरा सबसे बड़ा श्रोत है, श्रीलंका की पूरी जीडीपी का 8.25 परसेंट हिस्सा टूरिज्म से आता है।

वर्ष 2019 में श्रीलंका की नई सरकार ने टैक्स में कमी की और कुछ प्रकार के टैक्स पूरी तरह खत्म कर दिए। श्रीलंका सरकार ने पूरी तरह ऑर्गेनिक खेती की बात कही, जिससे फर्टिलाइजर उद्योग पूरी तरह खत्म हो गया और उसमे काम करने वाले 90 परसेंट मजदूर बेरोजगार हो गए। वर्ष 2020 में कोविड पैंडेमिक के दौरान श्री लंका की टोटल जीडीपी ग्रोथ रेट रिकॉर्ड माइनस 3.6 परसेंट रही। सभी वस्तुओं के दामों में बेतहाशा वृद्धि हुई। श्रीलंका का फॉरेन रिजर्व में भी 70 परसेंट की गिरावट दर्ज हुई।

ऐसे समय में भारत सरकार ने तत्काल प्रभाव से श्रीलंका की मदद कीय 25 टन से अधिक दवा और कोविड वैक्सीन श्रीलंका को प्रदान की। जिसकी तात्कालिक लागत 370 मिलियन डॉलर थी। भारत सरकार ने इसके अतरिक्त चांवल, गेहूं, दूध, कैरोसिन आदि जरूरी वस्तुएं भी श्रीलंका को भेजी। भारत सरकार ने श्रीलंका को आईएमएफ से 2.9 बिलियन डॉलर की मदद लेने में सहायता की। भारत ने श्रीलंका को 4 बिलियन डॉलर का तात्कालिक अनुदान भी प्रदान किया। इस मानवीय संकट से निकलने के लिए भारत ने यथा संभव श्रीलंका की सहायता की। भारतय श्रीलंका में चीन के प्रभाव को न्यूनतम करने के उद्देश्य से कार्य कर रहा है, भारत चीन की वास्तविक नीति से भली-भांति परिचित है जिसे चीन ने बीआरआई और व्यापारिक उद्देश्य के नाम पर छिपा रखा है। विगत वर्षों में भारत श्रीलंका को यह बताने का भरसक प्रयास कर रहा है कि चीन की वास्तविक मंशा क्या है? और कैसे वह विकास और सहयोग के नाम पर सभी दक्षिण एशियाई देशों के कर्ज के जाल में फंसा रहा है। हाल ही में भारत की एक कंपनी यू सोलर क्लीन एनर्जी सॉल्यूशंस ने श्रीलंका के सस्टेनेबल एनर्जी अथॉरिटी के साथ हाइब्रिड रिन्यूएबल एनर्जी सिस्टम के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत सरकार ने इस परियोजना हेतु 11 मिलियन अमेरिकी डॉलर की अनुदान सहायता प्रदान की है। श्रीलंका ने इसके पहले इसके लिए चीन की कंपनी सिनो सोवर एटीकेविन को स्वीकृति प्रदान की थी, बाद में श्रीलंका ने भारत की कंपनी को यह कार्य सौंपा।

भारत और श्रीलंका एक मल्टी प्रोजेक्ट पेट्रोलियम पाइपलाइन स्थापित करने पर सहमत हुए हैं। दोनों देशों ने व्यापक कनेक्टिविटी के विकास हेतु लोगों की लोगों से कनेक्टिविटी, नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग, लाजिस्टिक बंदरगाह कनेक्टिविटी तथा विद्युत आदान-प्रदान हेतु भी समझौता किया है। भारतीय रुपए में व्यापार हेतु भी दोनों देश सहमत हुए हैं। श्रीलंका ने अब भारतीय यूपीआई को भी अपना लिया है।

चीन का श्रीलंका पर प्रभावः

अपनी स्वतंत्रता के पश्चात वर्ष 1950 में श्रीलंका ने चीन को एक राष्ट्र के रूप में स्वीकार किया। दोनों देशों के मध्य 20वीं शताब्दी के दौरान संबध में एक विशेष प्रकार की ऊर्जा का अभाव रहा, जोकि कुछ विशेष काल खंडों को छोड़ दिया जाय तो भारत के साथ हमेशा बना रहा। 21 वीं सदी में चीन की बढ़ती आर्थिक सामरिक शक्ति ने उसे एशिया महाद्वीप विशेष कर दक्षिण एशिया में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। हिंद महासागर चीन के लिए विशेष महत्व रखता है, चीन अपने पेट्रोलियम का आयात और यूरोप तथा अफ्रीकी महाद्वीप में अपने सामानों के निर्यात इसी समुद्री रास्ते से करता है। चीन के लिए श्रीलंका इस लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह भारत के दक्षिणी भाग से एकदम नजदीक है। श्रीलंका की भौगोलिक स्थिति उसे चीन के लिए महत्वपूर्ण बनाती है, चीन का महत्त्वाकांक्षी स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स योजना की शुरुवात भी श्रीलंका से ही होती है। 21 वीं सदी की शुरुवात से ही चीन ने श्रीलंका में ढांचागत विकास हेतु भारी निवेश किया है। चीन आंतरिक युद्ध से पीड़ित श्रीलंका को हर संभव सहयोग प्रदान करने के साथ ही विश्व के प्रत्येक मंच पर उसकी खुली पैरवी भी करता रहा है। चीन ने श्रीलंका को बंदरगाहों के पुनर्निर्माण और उसमे सुधार हेतु ऋण प्रदान किया। वर्ष 2012 तक हमबनटोटा बंदरगाह का निर्माण कार्य पूर्ण होने तक चीन ने उसके लिए 450 मिलियन डॉलर का ऋण मुहैया कराया। ऋण न चुका पाने की स्थिति में वर्ष 2017 में श्रीलंका को यह बंदरगाह अगले 99 वर्षों के लिए चीन को लीज पर देना पड़ा। राजपक्षे सरकार के दौरान चीन ने श्रीलंका को 4.8 मिलियन डॉलर का ऋण दिया। चीन ने श्रीलंका में हमबनटोटा के पास एक नया एयरपोर्ट, कोलंबो पोर्ट का निर्माण और उच्च राज मार्गों के निर्माण में भारी मात्रा में निवेश किया है। चीन श्रीलंका में 3 बिलियन डॉलर की सहायता से एक तेल शोधक केंद्र स्थापित करने की योजना भी बना रहा है। वर्ष 2005 तक चीन का श्रीलंका में कुल निवेश 16.4 मिलियन डॉलर था, यानी कुल एफडीआई का 1 परसेंट। वर्ष 2015 में चीन का निवेश बढ़ कर 338 मिलियन डॉलर हो गया, जो कुल एफडीआई का 35 परसेंट है।

भारत का वर्ष 2015 तक श्रीलंका में निवेश कुल एफडीआई का मात्र 7 परसेंट था। चीन ने वर्ष 2006 से 2015 तक श्री लंका के बुनियादी ढांचे के निर्माण से जुड़ी परियोजनाओं में लगभग 12 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश किया हुआ है। चीन ने रूस और पाकिस्तान के बाद श्रीलंका को बीआरआई के तहत सबसे अधिक कर्ज दे रखा है। जिसकी ब्याज दर भी आईएमएफ और अन्य देशों के ब्याज दर से अधिक है। चीन ने वित्तीय संकट के समय श्रीलंका को 42.4 मिलियन डॉलर का एसिस्टेंस प्रदान किया। वर्ष 2019 तक श्रीलंका के कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में चीन की हिस्सेदारी 23.6 परसेंट है। श्रीलंका पर वर्ष 2022 तक लगभग 7 बिलियन अमेरिकी डॉलर का कर्ज है। श्रीलंका ने अपने बकाए ऋण की पूर्ति हेतु 4.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर के लिए चीन की निर्यात आयात बैंक के साथ समझौता किया है। चीन ने चाइना मर्चेंट पोर्ट होल्डिंग्स के नेतृत्व में कोलंबो बंदरगाह को दक्षिण एशिया वाणिज्यिक और लोजिस्टिक हब के रूप में विकसित किया है। चीन श्रीलंका के छात्रों को अध्ययन हेतु स्कॉलरशिप प्रदान कर रहा है। नेपाल की तरह चीनी भाषा मंदारिन के अध्ययन हेतु श्रीलंका के विश्व विद्यालयों में चीनी अध्ययन विभाग खोले गए हैं। चीन श्रीलंका की अर्थव्यवस्था के साथ ही वहां की संस्कृति में भी अपने प्रभाव स्थापित करने हेतु प्रयासरत है।

2. निष्कर्ष

भारत एवं श्रीलंका सदियों पुरानी सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संबंधो के एक ऐसे ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर आज खड़े हैं, जहां दोनों के दूसरे के हित संरक्षण एवं संवर्धन के पूरक है। भारत के सामरिक हित, श्रीलंका के साथ बेहद ही मजबूती के साथ जुड़े हैं। भारत ने प्रारंभ से ही श्रीलंका के साथ सद्भाव पूर्ण एवं मित्रवत संबध रखा है। श्रीलंका की भौगोलिक स्थिति उसे अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है, जिसके कारण वह न केवल भारत अपितु चीन, अमेरिका तथा अन्य सभी देशों की विदेश नीति में प्रमुख स्थान रखता है।चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए भारत को श्रीलंका के साथ अपने रिश्ते को एक नई ऊर्जा प्रदान करने की जरूरत है। भारत को श्रीलंका के विकास कार्यों में अपने निवेश को बढ़ाते हुए, श्रीलंका के आम-जनमानस के कल्याण में भी ओर अधिक मात्रा में अपना योगदान देने की आवश्यकता है। विगत दशक में भारत श्रीलंका ने समुद्र सुरक्षा में सहयोग बढ़ाने की कोशिश की है। रक्षा सहयोग बढ़ाने हेतु दोनों देश वार्षिक रक्षा संवाद तथा सेना एवं नौसेना के अधिकारी स्तर पर भी बातचीत कर रहे हैं। भारत के लिए श्रीलंका के साथ रक्षा सहयोग एवं सैन्य अभ्यास बंगाल की खाड़ी तथा मलक्का जलडमरू मध्य क्षेत्र में भारतीय हितों के सरंक्षण के अत्यंत आवश्यक है। पिछले 10 वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग एवं विश्वास के बढ़ने के बावजूद भी भारत श्रीलंका संबंधों में राजनीतिक एवं भौगोलिक जटिलताओं को खत्म करना एक चुनौती है। कच्छतीव द्वीप विवाद का पुन: उठना श्रीलंका के नागरिकों को अपने क्षेत्र में भारतीय प्रभुत्व का डर उत्पन कर रहा है। दक्षिण एशिया में भारत केंद्रित सुरक्षा प्रणाली को लेकर भी श्रीलंका की स्थिति अस्पष्ट है। पूर्व में श्रीलंका राजनीतिक संकट से ग्रस्त रहा है लेकिन वर्ष 2022 में आए ऐतिहासिक आर्थिक संकट ने उसके सामने अस्तित्व का प्रश्न खड़ा कर दिया, लेकिन भारत ने जिस तीव्रता से श्रीलंका का साथ दिया, उसने एक बार फिर से भारत श्रीलंका संबंधों को सुदृण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्रीलंका का अस्थिर होना भारत के लिए जोखिम भरा है। समुद्री सीमा, शरणार्थी संकट तथा मछुवारों के मुद्दे आदि पर भी भारत को श्रीलंका के साथ स्थाई समाधान खोजने की आवश्यकता है। भारत को श्रीलंका की जमीं पर चीन की बढ़ती उपस्थिति को संतुलित करने के लिए उसके साथ अपने सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रिश्तो को वर्तमान परिदृश्य में

पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। मोदी शासन काल में भारतीय विदेश नीति ने इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति की हैय जिसमें वह उन देशों के साथ संबंधों को उसी सांस्कृतिक सामाजिक ढांचे में लाने की कोशिश कर रही है जो वे देश कभी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के आदर्श को स्वीकार करते थे ।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Ogden, C. (2017). Indian national security. Oxford University Press.
Pant, H. V., & Shah, K. (2002). India's South Asia policy: Shift and continuities. In Routledge handbook of South Asia foreign policy. Routledge.
Rajah, A. S. (n.d.). Government and politics in Sri Lanka. Routledge.
Singh, H. (2022). Intervention in Sri Lanka: The IPKF experience. Manohar Publishers.
Yusuf, D. (n.d.). Sri Lanka economic crises and its impact on India. Centre of Land Warfare Studies.
Brinda, S. S. (1984). India and her neighbors: A study of political, economic, and cultural relations and interactions. New Delhi.
Pande, A. (2017). From Chanakya to Modi: The evolution of India's foreign policy. HarperCollins Publishers.
Ministry of External ffAairs. (2018, February 28). Annual report 2016-2017.
Pandey, R. S. (2013), China Centric Indian Security Concerns, Akriti Publication.
Dixit, J. N. (2008), Indian Foreign Policy, Prabhat Publication.
Harisharan, - Sinha, H. K. (D.K.). Indian Ocean Challenges and Options, Pratyush Publication.
Dainik Jagran. (2020, January 11), Gorakhpur.
Dainik Jagran. (2020, January 13), Gorakhpur.